

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2475 • उदयपुर, मंगलवार 05 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

उदास चेहरों पर खुशी की इबारत

हादसों में हाथ-पैर गंवाने वाले कृत्रिम अंग पाकर चलने और करने लगे हैं अपना दैनन्दिन काम। विभिन्न घटनाओं-दुर्घटनाओं में हाथ-पैर गवां देने वाले अनेक लोगों को संस्थान द्वारा अगस्त माह में जगह-जगह शिविर आयोजित कर कृत्रिम अंग (हाथ-पैर) लगाए गए। इससे पूर्व इन दिव्यांग बन्धु-बहनों के कृत्रिम अंग लगाने के लिए माप शिविर लगाए गए थे। अगस्त माह में कुल 750 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाए गए।



• **खुर्जा** - सिद्धार्थ पब्लिक इंटर कॉलेज खुर्जा (उत्तरप्रदेश) परिसर में 12 अगस्त को 26 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व कैलिपर प्रदान किए गए। सेवा प्रेरक एवं संयोजक श्री योगेन्द्र प्रताप राघव जी के अनुसार 19 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग 7 दिव्यांगों को टेक्नीशियन ने कैलिपर लगाए। शिविर के मुख्य अतिथि खुर्जा के पूर्व विधायक श्री हरपाल सिंह जी थे। जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व प्रधान श्री सत्यवीर जी शास्त्री, श्री जयप्रकाश जी चौहान व श्री राजप्रताप सिंह जी मंचासीन थे। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद लड्डा ने अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री भरत भट्ट ने किया।



• **आकोला** - खंडेलवाल धर्मशाला, आकोला (महाराष्ट्र) में दो दिवसीय कृत्रिम अंग माप शिविर 27 व 28 अगस्त को आयोजित किया गया जिसमें 206 दिव्यांगजन ने पंजीयन करवाया। इनमें से जांच के बाद 175 दिव्यांगों के कृत्रिम अंग जबकि 20 लोगों के कैलिपर बनाने के माप लिए गए।

पी एंड ओ श्रीमती रोली के निर्देशन में टेक्नीशियन श्री नाथू सिंह व श्री उत्तम चंद ने दिव्यांगों के हाथ और पांवों का माप लिए। शिविर के मुख्य अतिथि समाजसेवी श्री बृजमोहन जी चितलांग थे। अध्यक्षता गौरक्षण संस्थान के अध्यक्ष श्री प्रकाश जी भाउ ने की। मंच पर विशिष्ट अतिथि के रूप में संस्थान की आकोला शाखा के संयोजक श्री सुभाषचन्द्र जी लड्डा व श्री हरीश जी मानधने, श्री राधेश्याम जी भंसाली, श्री भगवान जी भाला, श्री रमेश जी बाहेती, श्री सुनील जी मानधने, श्री रतनलाल जी खंडेलवाल, श्री गोपाल जी पुरोहित व पुसद शाखा के संयोजक श्री विनोद जी राठौड़ बिराजित थे। शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद जी लड्डा ने अतिथियों का स्वागत-सम्मान एवं श्री भरत जी भट्ट ने शिविर संचालन में सहयोग किया।



• **मालपुरा** - राजस्थान में टोंक जिले में मालपुरा में 19 अगस्त को श्री बारादर रामचरित मानस मण्डल के सौजन्य से सम्पन्न दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर में 177 दिव्यांगों ने पंजीयन करवाया। जिनमें से 22 का डॉ. एस. एल. गुप्ता ने जांच के बाद निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया। प्रोस्थेटिक टेक्नीशियन श्री नाथूसिंह जी व श्री उत्तमचंद जी ने 24 लोगों के कृत्रिम हाथ-पैर तथा 35 के कैलिपर बनाने का माप लिया। महेश भवन में आयोजित शिविर के मुख्य अतिथि टोडारायसिंह नगर के विधायक श्री कन्हैयालाल जी चौधरी थे। अध्यक्षता टोंक की जिला प्रमुख श्रीमती नरेश सरोज जी बंसल ने की। संस्थान की शाखा के संयोजक श्री सुरेन्द्र मोहन जी जैन एवं शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद जी लड्डा ने अतिथियों का स्वागत किया। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री सकाराम जी चौपड़ा (प्रधान), अरुण जी तोमर, विकास जी जैन, राजकुमार जी जैन, सुश्री ऐश्वर्या जी जैन व सुश्री निकी जी जैन थी। व्यवस्था में श्री मुकेश जी त्रिपाठी व श्री भरत जी भट्ट सहयोग किया।



निःशुल्क छाता वितरण

संस्थान ने शहर में दिव्यांगों, कामकाजी महिलाओं और श्रमिकों को वर्षा के पूरे मौसम में छाते वितरित किए। संस्थान संस्थापक पूज्य श्री कैलाश जी 'मानव' ने जुलाई में इस अभियान का शुभारंभ करते हुए कहा कि अगले वर्ष से यह कार्यक्रम पूरे देश में जहां भी संस्थान की शाखाएं हैं, चलाया जाएगा। अब तक 1000 छाते वितरित किए जा चुके हैं।



NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आओ **नवरात्री** मनाएं,
कन्या पूजन करवाएं!



नवरात्री कन्या पूजन

7th - 15th October, 2021

बने किसी दिव्यांग कन्या के धर्म माता पिता



Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001



Donate via UPI



narayanseva@sbi

Head Office: 483, Sevadhham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA

+91 294 662 2222 | +91 7023509999

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

मैं अभी थोड़े दिनों पहले बॉम्बे गया था। तो एक दानदाता के यहाँ गया तो उन्होंने कहा— साहब मेरे पिताजी को प्रणाम करने चलते हैं। पास के घर में दो – तीन नौकर रख रखे थे। पिता अच्छे, माता अच्छी, पुत्र अच्छे पूरी व्यवस्था कर रखी थी। दो— तीन नर्सिंग की व्यवस्था कर रखी थी। परन्तु आर्थराइटिस, हाथ टेढ़े, कोहनी टेढ़ी, कंधे ऊँचे नहीं हो सकते। कितनी करुणा आई, कितनी दया आई। कितना रहम आया ? सबकुछ है। पोता अमेरिका जाने की तैयारी कर रहा है।

बेटे के पाँच कारखाने हैं, सौलह सौ आदमी काम करते हैं। बेटा भी अच्छा, बहू भी अच्छी। लेकिन देह की पीड़ा खुद को ही भोगनी होती है। आज से सावधान हो जावे अपने आरोग्य का, स्वास्थ्य का ध्यान रखेंगे। कि ये किराये का मकान मेरे ठाकुर ने, आपके ठाकुर ने जो सौप रखा है। इस किराये के मकान का, इस देह— देवालय का ध्यान रखेंगे तो आहार भी ठीक रखेंगे। विहार भी रखेंगे, प्राणायाम भी करेंगे, योगासन भी करेंगे।

प्रातः उठकर योग करें और परिवार का ध्यान रखें, मीठा और सोचकर हम बोलें, लक्ष्य का हम बाण रखें। कर्तव्यों में, सेवा में हो, बुजुर्गों का सम्मान हो, कर्म हमारे ऐसे हो, जो धर्म का प्रमाण हो।

जो धर्म का प्रमाण हो..... ।।

पहला सुख निरोगी काया किताब में लिखा है, हमने भी पढ़ा। आज से संकल्प करे और मुझे देव दक्षिणा दे देवें। पहला सुख निरोगी काया को, आज से मूलमंत्र बना लेंगे। चौबीस घण्टे में डेढ़ घण्टा तो खुद के लिये दे देंगे। औरों को प्रमोदता।

खाली रहेंगे आप, उसके ये हुआ, उनके ये हुआ, पड़ोस में ये हुआ, दक्षिण में ये हुआ उत्तर में ये। आपके क्या हुआ ? अस्थमा हो गया कन्ट्रोल कर लीजिये, औषधि लीजिए। हाईब्लड प्रेशर हुआ कोई बात नहीं, जीवनभर दवाई लीजिए। पर निष्ठाभाव से लीजिए।



नवरात्र यानि 9 विशेष रात्रियां। इस समय को शक्ति के 9 रूपों की उपासना का श्रेष्ठ काल माना जाता है। 'रात्रि' शब्द सिद्धि का प्रतीक है। प्रत्येक संवत्सर (साल) में 4 नवरात्र होते हैं जिनमें, दो बार नवरात्रों में आराधना का विधान है। विक्रम संवत् के पहले दिन अर्थात् चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (पहली तिथि) से 9 दिन यानी नवमी तक नवरात्र होते हैं। (इस साल यह 7 से 15 अक्टूबर 2021 तक है) ठीक उसी तरह 6 माह आश्विन मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से महानवमी यानी विजयादशमी के एक दिन पूर्व तक देवी की उपासना की जाती है। सिद्धि और साधना की दृष्टि से शारदीय नवरात्र में लोग आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति के संचय, नियम, यज्ञ, भजन, पूजन, योग—साधना आदि अनुष्ठान करते हैं।

देवी (शक्ति) की उपासना आदिकाल से चली आ रही है। वस्तुतः श्रीमद्देवी भागवत महापुराण के अंतर्गत देवासुर संग्राम का विवरण दुर्गा की उत्पत्ति के रूप में उल्लेखित भी है।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

अपने दिवंगत प्रियजनों को प्रसन्न करने का पावन अवसर

श्राद्ध पक्ष

20 सितम्बर – 6 अक्टूबर 2021

पितृ शान्ति से पाएं पितृ कृपा

श्राद्ध तिथि
ब्राह्मण भोजन
सेवा

₹5100

श्राद्ध तिथि तर्पण
व ब्राह्मण
भोजन सेवा

₹11000

सप्तदिवसीय भागवत
मूलपाठ, श्राद्ध तिथि
तर्पण व ब्राह्मण
भोजन सेवा

₹21000

Bank Name: State Bank of India
Account Name: Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001



UPI
yono SBI Payments

UPI Address for Indian donors which is narayanseva@sbi



Head Office: 483, Sevadhham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA

+91 294 662 2222 | +91 7023509999

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

सम्पादकीय

अपनों से अपनी बात

पल-पल का सदुपयोग

कहा जाता है कि 'संतोषी नर सदा सुखी, अंत लोभी महा दुःखी।' इसका सामान्य सा अर्थ है कि संतोषी वृत्ति का है वह सुखी रहता है व जो असंतोषी है वह दुःखी। किन्तु संतोषी कौन ? असंतोषी कौन ? जीवन में संतोष क्या ? असंतोष क्या है ? ठीक से विचार करें तो संतोष को सबसे बड़ा धन भी कहा जाता है। किसी कवि ने लिखा भी है -

गोधन, गजधन, बाजीधन,
और रतन धन खान।
जब आवे संतोष धन,
सब धन धूरि समान।।

यह संतोष ही है जो हमें किसी एक सीमा पर पहुँच कर सोचने को विवश करता है कि अब कितना दौड़ूंगा ? सच तो यह है कि इस दौड़ का कोई अंत नहीं है। दुनिया में और सब दौड़ों का अंतिम बिन्दु होता है पर असंतुष्ट व्यक्ति कहीं भी, किसी भी बिन्दु पर रुकना नहीं चाहता। उसे अनंत व अतृप्त क्षुधा व्याप जाती है। उसकी तृप्ति के लिये वह उचित-अनुचित का विचार भी नहीं कर पाता, तब समाज में विसंगतियों का दौर प्रारंभ होता है। असंतोष की ज्वाला बड़ी भयावह है, अतः संतोष धारण करके ही मानवता को, संबंधों को, स्वयं को बचाया जा सकता है।

कुछ काव्यमय

धीरज से उपजा संतोष
मानव को संस्कारी बनाता है।
संतोष फलित होकर हरेक को
सदाचारी बनाता है।
यह वह बीज है जो
मीठे फल देता है।
सारी व्यग्रताएं, सारी ऐषणायें
जड़मूल से हर लेता है।

- वरदीचन्द्र राव

जब हम अपनी उम्र के बारे में सोचें तो ये ध्यान रखें कि हमने कितना समय सदाचार, परमात्मा, के ध्यान, धर्म-कर्म के काम में व्यतीत किया है, क्योंकि कायदे से वही हमारी सही उम्र का पैमाना है।

मनुष्य को अपनी उम्र के पल-पल का सही उपयोग करना चाहिए क्योंकि मानव जीवन दुर्लभ है। इसे सार्थक बनाएं और पीछे छोड़ जाएं अपनी यादगार है। हमारी जो उम्र है, उसमें से ज्यादातर समय तो मनुष्य व्यर्थ की बातों में बर्बाद कर देता है। इस सम्बन्ध में मुझे एक कथा प्रसंग का स्मरण भी आ रहा है। गौतम बुद्ध के एक शिष्य थे।

वे बुद्ध के साथ ही रहते थे। स्वभाव से बहुत ही भोले-भाले थे। एक दिन बुद्ध ने सोचा कि चलो आज इस वृद्ध के और सरलमना इंसान से कुछ गहरी बातें करते हैं। बुद्ध ने उस बूढ़े



शिष्य से पूछा, 'क्या आयु होगी आपकी?' शिष्य ने उत्तर दिया, 'यही कोई 70 साल।' बुद्ध मुस्कराए और कहा, 'नहीं आप सही उम्र नहीं बता रहे हैं।' ये सुनकर शिष्य परेशान हो गया। वह जानता था कि बुद्ध बिना किसी वजह से एक भी शब्द नहीं कहते हैं। और, यदि बुद्ध कह रहे हैं तो जरूर कोई बात होगी।

सफलता की कसौटी

जब हम कोई लक्ष्य तय करें तो पहले उसके बारे में भली प्रकार सोच लें। जब निर्णय कर लें, तब हमारा पूरा ध्यान लक्ष्य की पूर्ति पर ही रहना चाहिए। जीवन के किसी क्षेत्र में सफलता की यही कसौटी है।

एक युवक का सपना था कि वह हिमालय की किसी चोटी पर चढ़े। एक दिन वह इसे साकार करने के लिए हिमालय की तलहटी तक पहुंच गया और आगे बढ़ने लगा। वह नजर ऊपर उठाता और फिर आगे बढ़ता, लेकिन कुछ ही देर में उसकी हिम्मत टूटने लगती। उसे लगता कि वह सपना पूरा नहीं कर पाएगा। तभी

उधर से गुजरता एक वृद्ध गडरिया दिखाई दिया। वह उसके पास गया और बोला कि मैं हिमालय की चोटी पर चढ़ना चाहता हूँ। लेकिन थोड़ा-सा चलने पर ही थक जाता हूँ। मेरा मार्गदर्शन कीजिए। तभी वृद्ध मुस्कराया और बोला, 'तुम अभी से हार इसलिए मान रहे हो कि तुम हिमालय की ऊंचाई पर नजर डालकर बार-बार यही सोचते हो कि बहुत ज्यादा ऊंचाई पर जाना है, कब तक पहुंचूंगा और न जाने कितनी परेशानियां आएंगी। जब तक तुम्हारा ध्यान इन बातों पर रहेगा, तुम अपने सपने से दूर ही रहोगे। तुम्हें अपने हर



बढ़ते कदम पर ही ध्यान देना है।' युवक की समझ में आ गया कि वह कहां गलती कर रहा था। अब उसमें हिम्मत और जोश भर गया। वह अपने कदम बढ़ाने पर ही ध्यान केंद्रित करने लगा और परिणाम यह हुआ कि वो हिमालय की चोटी पर पहुंच गया। मित्रों! इस प्रसंग का यही अर्थ है कि जब हम कोई लक्ष्य तय करें तो पहले से उसके बारे में भी प्रकार सोच लें। जब निर्णय कर लें, तब आपका पूरा ध्यान लक्ष्य की पूर्ति पर ही रहना चाहिए। गुरु द्रोणाचार्य ले जब तीरंदाजी प्रशिक्षण के दौरान अपने शिष्यों की परीक्षा ली, तो लक्ष्य पेड़ पर बैठी चिड़िया की आंख थी। लेकिन उस पर ध्यान केवल अर्जुन का ही गया। जबकि अन्य शिष्यों का ध्यान डालियों के घने पत्तों के बीच बैठी चिड़िया पर था। लक्ष्य स्पष्ट नहीं होने पर वे सफल नहीं हो पाए। जबकि अर्जुन अपन लक्ष्य सिर्फ चिड़िया की आंख को बताकर परीक्षा में सफल हो गया। इन प्रसंगों से स्पष्ट हो जाता है कि बिना लक्ष्य तय किए किसी भी क्षेत्र में सफलता सम्भव नहीं है।

- सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

जब सत्तू पक गया और उसे ढंडा करने पतरे पर फैला दिया तो बच्चों की टोली सत्तू को किसी के द्वारा दान में दी गई थैलियों में भरने लगे। अपरान्ह 3-4 बजे तक समूचे आटे का सत्तू बन गया। काम करने वाले इतने लोग थे फिर भी मसौदों हेतु खराब कपड़ों की जरूरत हुई तो कैलाश खुद ही दौड़ता हुआ अपने घर की तरफ भागा। उत्साह इतना था कि उसके पांव मानों जमीन पर नहीं पड़ रहे थे, जल्दी जल्दी में किंवाड़ बन्द करते हुए उसका अंगूठा किंवाड़ में आ गया, दर्द इतना जोरों से हुआ कि वह चीख पड़ा। इसके बावजूद भी वह बेफिक्र होकर काम में लगा रहा।

थैलियों में पक तैयार सत्तू को एक तरफ सुरक्षित रखवा दिया। समीप ही आदिवासी ग्राम पई था, अगले रविवार को इसी गांव में जाकर सत्तू का वितरण करने का निश्चय किया गया। दो-तीन लोगों को पई भेज दिया। उन्होंने वहां गांव की चौपाल में जाकर सूचना दे दी कि अगले सप्ताह नारायण सेवा के लोग पौष्टिक आहार व कपड़ों का वितरण करने आयेंगे। नारायण सेवा नाम की न तो कोई संस्था थी और न ही इसका अभी तक

पंजीकरण करवाया गया था मगर एक मुट्ठी आटा एकत्र करने वाले डिब्बों पर नारायण सेवा लिख देने से यह नाम स्वतः ही प्रचलित हो गया था। कैलाश भी जब लोगों के मुख से यह नाम सुनता उसे अच्छा लगता।

अब सब आगामी रविवार की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगे। कैलाश व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दे रहा था तभी वज्रपात हो गया। कैलाश के पिता बहुत समय पूर्व ही अपना समूचा व्यापारिक कार्य समेट ऋषिकेश स्थित स्वर्गाश्रम में रहने चले गये थे।

ताउजी का पहले ही देहान्त हो चुका था। पिताजी परमार्थ निकेतन में रहते थे, वहां उन्हें अचानक छाती में दर्द उठा। कैलाश पई जाने की तैयारियां को पीछे का काम सौंप तुरन्त वहां पहुंचा।

पिताजी को प्राथमिक उपचार की सुविधाएं मिल गई थी मगर कैलाश उनके इलाज में कोई कोर कसर नहीं छोड़ना चाहता था। वह उन्हें तुरन्त दिल्ली लेकर आ गया। वहां हर तरह का चेकअप-जांच वगैरह करवाई। कोई गंभीर बात नजर नहीं आई तो कैलाश उन्हें उदयपुर ले आया।

हाई ब्लड प्रेशर को कंट्रोल में रखेंगे ये छोटे-छोटे टिप्स

ब्लड प्रेशर की समस्या आज लोगों में आम देखने को मिलती जा रही है। इसे कंट्रोल में रखना बेहद जरूरी होता है। नहीं तो आगे चलकर मोटापा, हाई कोलेस्ट्रॉल, दिल से जुड़ी बीमारियों आदि का सामना करना पड़ सकता है। ब्लड प्रेशर की परेशानी मुख्य रूप से गलत और अनियमित खान-पान, नमक का अधिक सेवन आदि कारणों से होती है। वैसे तो शुरुआत में इसे नियंत्रण में रखने के लिए दवाई खाने की जरूरत नहीं पड़ती है लेकिन समस्या बढ़ने पर डॉक्टरी सलाह जरूर लेनी चाहिए। ऐसे में समय रहते इस शुरुआती समस्या को अपनी जीवनशैली में कुछ बदलाव लाकर कंट्रोल किया जा सकता है।

ऑयली फूड्स से रखें परहेज—ब्लड प्रेशर के मरीजों को अपनी डाइट का विशेष ध्यान रखना चाहिए। बाहर का जंक और ऑयली फूड खाने से बचना चाहिए। साथ ही भोजन दूध, दही, हरी सब्जियां, फल आदि पौष्टिक चीजों का सेवन करना चाहिए।

नमक का सेवन करें कम— हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों को अपने खाने में नमक का प्रयोग कम करना चाहिए। ऐसा करने से ब्लड प्रेशर कंट्रोल में रहेगा।

तनाव से रहें दूर— आज की बिजी और भागदौड़ भरी जिंदगी में हर कोई एक-दूसरे से आगे निकले की कोशिश में रहता है लेकिन ऐसा न होने पर तनाव की चपेट में आ जाता है। ऐसे में हमेशा खुश रहने की कोशिश करें।

लहसून — कई औषधिय गुणों से भरपूर लहसून शरीर को बीमारियों से बचाने का काम करता है। इसका सेवन करने से कोलेस्ट्रॉल कंट्रोल में रहता है।

जिससे दिल से जुड़ी बीमारियों के होने का खतरा कम रहता है। आप इसे घर में खाना बनाने के लिए इस्तेमाल करने के साथ इसकी कुछ कलियों को पानी के साथ खा भी सकते हैं।

काली मिर्च— ब्लड प्रेशर के मरीजों के लिए काली मिर्च का सेवन करना बेहद फायदेमंद होता है। 1/2 गिलास पानी में काली मिर्च का पाउडर मिक्स कर पीने से ब्लड प्रेशर नियंत्रण में रहता है।

आंवला और प्याज— ब्लड प्रेशर के पेशेंट्स को अपनी डाइट में आंवला जरूर शामिल करना चाहिए। इसके अलावा आंवला पाउडर में प्याज का रस मिक्स कर सेवन करने से भी ब्लड प्रेशर कंट्रोल में रहता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार.. जन्मजात पोलियो वास्तु दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
601 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलारें निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग निधि

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
स्कील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैद्युत्	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलार्ड/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अनुभव अमृतम्



शुद्ध शाकाहारी हूँ- भैया। शुद्ध शाकाहारी भोजन शाला में चलते हैं, बहुत अच्छा, भोजन किया। डाक बंगले गये रात को साढ़े बारह बजे तक बीस बार जय कालिका माता, बहुत अच्छा, जय कालिका माता। कालिका माता तो महान है। नरेन्द्र, विवेकानंद बन गया कालिका माता के आशीर्वाद से। पूरे विश्व में दुन्दुभि भी बजा दी-हिन्दू धर्म की। शिकागो में लेडिज और जेन्टल मैन कहते। पहली बार सुन रहे हैं बहनों और भाइयों। बहनों और भाइयों पूरा विश्व, पूरा ब्रह्माण्ड एक है। पिण्ड है कि ब्रह्माण्ड है। मेरे शरीर में मेरे ब्रह्माण्ड को देख रहा हूँ। सत्तर प्रतिशत जल और इस पूरे भू-मण्डल पर सत्तर प्रतिशत पानी है। तीस प्रतिशत पर पृथ्वी है बाकी समुद्र ही समुद्र है। समुद्र का पानी खारा वैसे ही मेरे देह देवालय का, सबके देह देवालय का पानी खारा। सूरज, चाँद, तारे। साढ़े बारह बजे रात को जैसे ही बाहर निकले तो कहा-जय कालिका माता। मैंने कहा-आपको तो शर्म आनी चाहिये पोस्ट मास्टर साहब। कालिका माता से आप बहुत दूर हैं। नाम तो लेते हैं लेकिन काम कालिका माता का नहीं करते। हाथ गया बन्दूक को, हाथ गया लेकिन लौट आया। बोला-कैसे इस्पेक्टर? कैसे अग्रवाल इस्पेक्टर कैसे? कालिका माता से मैं कैसे दूर हूँ? मैं तो कालिका माता का भक्त हूँ। तंत्र विद्या जानता हूँ, यज्ञ भी करना जानता हूँ। लोग उपासना करते हैं? आपकी उपासना? कालिका माता कहती है, भक्तों का उद्धार करो। कालिका माता कहती है, भूखें को भोजन कराओ। आपने पोस्टमास्टर साहब, सुबह से मैं देख रहा हूँ डेढ़ सौ मनीआर्डर बीस दिन पहले आ गये। विधवाओं की पेन्शन के मनीआर्डर थे, आपने पेमेन्ट नहीं बनवाया। बीस दिन में उनमें एडवाइस नहीं भरी। आपने पोस्टमैन को नहीं दिया। डाक आती है, बेग पड़े रहते हैं। आपके लेटर बॉक्स ठसाठस भरे हुए हैं। वो खोले नहीं गये, चिट्ठियाँ पहुँची नहीं। चिट्ठियाँ, वितरित नहीं हुई। कालिका माता का भक्त, शर्म आनी चाहिये आपको। कालिका माता तो भूखे को भोजन कराती है। भूखे को भोजन, प्यासों को पानी, निर्धन को वस्त्र, बीमार को दवा। हाँ, अग्रवाल इस्पेक्टर आपने सही कहा, मैं कालिका माता का नाम लेते हुए। मैंने कहा- चलिये चलिये अभी चलते हैं पोस्टमास्टर साहब। कल की तारीख में पेमेन्ट करवाते हैं। बदल गया जीवन का संसार। बदल गयी गृहस्थी, बदल गयी सृष्टि। जैसी गृहस्थी वैसी सृष्टि।

सेवा ईश्वरीय उपहार- 254 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से

संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर

सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, ऐन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम

1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।